नमाज़े चाश्त :- नमाज़े चाश्त मुस्तहब है कम अज़ कम दो और ज़्यादा से ज़्यादा चाश्त की बारह रकअ़तें है और अफज़ल बारह है कि हदीस में है जिसने चाश्त की बारह रकअ़तें पढ़ी अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में सोने का महल बनायेगा। इस हदीस को तिर्मिज़ी व इब्ने माजा ने अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया सही मुस्लिम शरीफ में अबू ज़र रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी कि फरमाते है सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आदमी पर उसके हर जोड़ के बदले सदका है (और कुल तीन सौ साठ जोड़ हैं)हर तस्बीह सदका है और हर हम्द सदका है और 'लाइलाह इल्लल्लाह' कहना सदका है और 'अल्लाहु अकबर' कहना सदका है और अच्छी बात का हुक्म करना सदका है और बुरी बात से मना करना सदका है और इन सब की तरफ से दो रकअ़तें चाश्त की किफायत करती हैं। तिर्मिज़ी अबू दरदा व अबू ज़र से और अबू दाऊद व दारमी नईम इब्ने हुमार से और अहमद इन सब से रावी रदियल्लाहु तआला अन्हुम कि फरमाते है सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला फरमाता है ऐ इब्ने आदम शुरूअ़ दिन में मेरे लिए चार रकअ़तें पढ़ ले आखिर दिन तक मैं तेरी किफायत फरमाऊँगा। तबरानी अबू दरदा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रावी कि फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जिसने दो रकअ़तें चाश्त की पढ़ीं ग़ाफिलीन यानी नेक काम से ग़ाफिल रहने वालों में नहीं लिखा जायेगा और जो छः पढ़े उस दिन उसकी किफायत की गई और जो आठ पढ़े अल्लाह तआला उसे कानितीन (फरमाँबरदार) में लिखेगा और जो बारह पढ़े अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में एक महल

बनाएगा और कोई दिन या रात नहीं जिसमें अल्लाह तआला बन्दों पर एहसान व सदका न करे और उस बन्दे से बढ़कर किसी पर एहसान न किया जिसे अपना ज़िक्र इल्हाम किया। अहमद व तिर्मिज़ी व इब्ने माजा अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रावी कि फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जो चाश्त की दो रकअ़तों पर मुहाफिज़त करे यानी हमेशा पढ़ता रहे तो उसके गुनाह बख़्श दिये जायेंगे अगर्चे समुन्दर के झाग बराबर हों।

मसअ़ला :- इसका वक़्त आफताब बलन्द होने से ज़वाल यानी निस्फुन्नहारे शरई तक है और बेहतर यह है कि चौथाई दिन चढ़े पढ़े। (आलमगीरी,दुर्रे मुख़्तार)